उच्च शिक्षा स्तर पर कार्यरत अध्यापकों की कक्षा शिक्षण दक्षता का अध्ययन

रीना सिंह*
दिनेश कुमार गुप्ता**

किसी राष्ट्र के विकास में उच्च शिक्षा का महत्त्वपूर्ण योगदान होता है। यह शिक्षा उच्च गुणवत्तापूर्ण होनी चाहिए। शिक्षा की गुणवत्ता बहुत हद तक शिक्षक के व्यवहार से प्रभावित होती है जिसे छात्र शिक्षक परस्पर अंत:क्रिया के अवलोकन से ज्ञात किया जा सकता है। प्रस्तुत शोध प्रपत्र में कक्षा में शिक्षकों के व्यवहार को ज्ञात किया गया है। इस शोध द्वारा यह तथ्य सामने आया है कि व्याख्यान के साथ नोट्स देने तथा छात्रों को पृष्ठपोषण देने में 67-70 प्रतिशत शिक्षक प्रभावी हैं जबकि शिक्षिकाओं का मात्र 33% है। वहीं 'छात्रों को उचित दिशा निर्देशन देने' में शिक्षिकाएँ अधिक दक्ष पाई गईं। अध्ययन से स्पष्ट है कि शिक्षक प्रशिक्षण कार्यक्रमों में बदलाव लाने की आवश्यकता है जिससे कि शिक्षक अपने छात्रों से संबंध बनाने में दक्ष हो पाएँ। यही नहीं यह शोध सेवाकालीन प्रशिक्षण की आवश्यकता को भी रेखांकित करता है।

किसी भी राष्ट्र के विकास में वहाँ की उच्च शिक्षा प्रणाली का अत्यन्त महत्त्वपूर्ण योगदान होता है। वास्तव में किसी भी राष्ट्र का आर्थिक, तकनीकी, वैज्ञानिक आदि क्षेत्रों में विकास एक सीमा तक वहाँ के उच्च शिक्षा में विकास के ऊपर निर्भर करता है। चूँकि शिक्षा के प्रसार में वृद्धि करके तथा शिक्षा स्तर का उन्नयन करके राष्ट्रीय विकास की दर को बढ़ाया जा सकता है और शिक्षा के प्रसार का लाभ तब तक नहीं मिल सकता जब तक शिक्षा गुणवत्तायुक्त न हो। यदि उच्च शिक्षा अध्ययन केंद्र से निकलने वाले विद्यार्थी गुणवत्तायुक्त मानव संसाधन के रूप में कार्य करते हैं तो राष्ट्र की प्रगति निश्चय व सहज रूप से होगी। विद्यार्थियों की उपलब्धि शिक्षक व्यवहार से प्रभावित होती है तथा छात्रों में मनुष्योचित अभिवृत्ति के विकास के लिए शिक्षक

**शोध छात्रा*, यू.जी.सी. (नेट) शिक्षाशास्त्र विभाग, इलाहाबाद विश्वविद्यालय, इलाहाबाद (उ. प्र.)
***शोध छात्र*, यू.जी.सी. (नेट) शिक्षाशास्त्र विभाग, इलाहाबाद विश्वविद्यालय, इलाहाबाद (उ. प्र.)

सबसे महत्त्वपूर्ण कारक होता है। सम्पूर्ण शिक्षा प्रणाली का विस्तार शिक्षक की गुणवत्ता पर निर्भर है।

कक्षा शिक्षण शिक्षक और छात्र के बीच परस्पर अंत:क्रिया की प्रक्रिया होती है। एक सुव्यवस्थित अवलोकन प्रणाली में निर्देशात्मक अधिगम, शिक्षक छात्र परस्पर उचित अंत:क्रिया की पहचान तथा शिक्षण वर्गीकरण का पूर्ण प्रतिनिधित्व होता है।

इस प्रकार स्पष्ट है कि अवलोकन पद्धति द्वारा शिक्षण गतिविधियों, शिक्षण दक्षता तथा इसके घटकों के प्रति जागरूकता उत्पन्न की जा सकती है। चूँकि किसी देश का विकास गुणवत्तायुक्त शिक्षा से प्रभावित होता है और शिक्षा की गुणवत्ता शिक्षक व्यवहार से प्रभावित होती है। शिक्षक व्यवहार को छात्र शिक्षक परस्पर अंत:क्रिया के अवलोकन द्वारा ज्ञात किया जा सकता हैं।

अत: शिक्षकों के कक्षा में व्यवहार को ज्ञात करने का प्रयास प्रस्तुत शोध प्रपत्र में किया गया है ताकि यह ज्ञात किया जा सके कि कक्षा शिक्षण के किन क्षेत्रों में शिक्षकों का व्यवहार शिक्षण दक्षता के अनुरूप है तथा कहाँ उन्हें और अधिक प्रशिक्षण की आवश्यकता है ताकि वे भविष्य में एक योग्य शिक्षक बन सकें।

पासी और शर्मा (1982) ने माध्यमिक स्तर के शिक्षकों की शिक्षण दक्षता को लेकर एक अध्ययन किया तथा अध्ययन से प्राप्त किया कि प्रश्न पूछना, पाठ का प्राक्कथन देना, कक्षा व्यवस्थापन करना, श्यामपट का प्रयोग करना, उचित भाषा में पाठ्य को प्रस्तुत करना इत्यादि शिक्षण विधियों के प्रति 70–80 प्रतिशत शिक्षकों में दक्षता पायी गयी।

पांडियन (1983) ने शिक्षक के व्यक्तिव, अधिगम शैली और शिक्षण–योजना के बीच सामान्य संबंध का प्रत्ययात्मक अवलोकन किया। निष्कर्ष में पाया गया कि शिक्षक का व्यक्तिव, अधिगम शैली उसकी शिक्षण योजना से प्रभावित होती है।

जेठी, रेनू और कुमार, बी. (2007) ने शिक्षक प्रभावशीलता का अध्ययन किया और पाया कि शिक्षकों का व्यक्तिव, शिक्षण योजना, शिक्षक छात्र अंत:क्रिया, निर्देशन इत्यादि शिक्षक की अन्य दक्षताओं की अपेक्षा अधिक महत्त्वपूर्ण हैं।

तिवारी, जी.एन. (2001) ने प्राथमिक शिक्षण, शिक्षकों की दक्षता और प्रशिक्षण आवश्यकता पर अवलोकनात्मक अध्ययन में पाया कि शिक्षकों में सामुदायिक संसाधन स्रोत का कक्षा शिक्षण में प्रयोग करना, छात्रों को निर्देशन देना, क्रियात्मक अनुसंधान करना, अनुवर्ती सेवा देना इत्यादि के प्रति कम दक्षता पायी गयी।

शिक्षकों की दक्षता को लेकर *पाल राजेन्द्र* (1993) *राम चंद्राकर और निलावर* (1997) *भाटिया, आर.* (2006), *नसीमा, सी.* (2006), *पठानिया* (2001), *राजेश्वर* (2002) ने अध्ययन किया और शिक्षकों को विभिन्न क्षेत्रों में और अधिक दक्ष होने के लिए प्रशिक्षण को आवश्यक माना।

उपर्युक्त अध्ययनों से स्पष्ट है कि उच्च शिक्षा के गुणात्मक अभिवृद्धि का एक महत्त्वपूर्ण घटक शिक्षण दक्षता है जो कि शिक्षण के समय परिलक्षित होता है। इसी बिन्दु को ध्यान में रखते हुए यह प्रासंगिक है कि यह अवलोकित किया जाए की क्या शिक्षक वास्तव में कक्षा की जिम्मेदारियों का निर्वहन उचित विधि से करते हैं?

अध्ययन के उद्देश्य

1. उच्च शिक्षा स्तर पर कार्यरत शिक्षक तथा शिक्षिकाओं की शाब्दिक कक्षा शिक्षण दक्षता की तुलना करना।
2. उच्च शिक्षा स्तर पर कार्यरत शिक्षक तथा शिक्षिकाओं की अशाब्दिक कक्षा शिक्षण दक्षता की तुलना करना।

परिकल्पनाएँ

1. (क) उच्च शिक्षा स्तरीय शिक्षक तथा शिक्षिकाओं की शाब्दिक प्रत्यक्ष कक्षा शिक्षण दक्षता में सार्थक अन्तर नहीं है।

   (ख) उच्च शिक्षा स्तरीय शिक्षक तथा शिक्षिकाओं की शाब्दिक अप्रत्यक्ष कक्षा शिक्षण कक्षा शिक्षण दक्षता में सार्थक अन्तर नहीं है।

2. (क) उच्च शिक्षा स्तरीय शिक्षक तथा शिक्षिकाओं की अशाब्दिक सकारात्मक कक्षा शिक्षण दक्षता में सार्थक अन्तर नहीं है।

   (ख) उच्च शिक्षा स्तरीय शिक्षक तथा शिक्षिकाओं की अशाब्दिक नकारात्मक कक्षा शिक्षण दक्षता में सार्थक अन्तर नहीं है।

समष्टि तथा न्यादर्श

प्रस्तुत समस्या के अध्ययन हेतु इलाहाबाद विश्वविद्यालय में कार्यरत समस्त शिक्षकों को समष्टि के रूप में सम्मिलित किया गया हैं। न्यादर्श हेतु कला संकाय में अध्यापनरत् कुल 60 शिक्षकों का चयन किया गया जिसमें 30 शिक्षक तथा 30 शिक्षिकाओं को लिया गया है।

शोध उपकरण

प्रस्तुत समस्या के अध्ययन के लिए शोधकर्त्ताओं द्वारा निर्मित 'कक्षा अवलोकन मापनी' का निर्माण किया गया है।

अवलोकन मापनी का निर्माण

इस मापनी में शिक्षक के उन शिक्षण व्यवहारों को सम्मिलित किया गया है जिनका प्रयोग शिक्षकों के द्वारा कक्षा अध्यापन की अवधि में किया जाता है। 'कक्षा अवलोकन मापनी' के निर्माण के लिए 'लैंडर्स की श्रेणी प्रणाली (Category System) का अनुकरण किया है तथा इस कक्षा अवलोकन मापनी को मुख्यत: दो भागों में बाँटा गया है–

1. शाब्दिक कक्षा अंत:क्रिया- शब्दिक कक्षा अन्त:क्रिया को दो भागों में विभाजित किया गया–

(क) प्रत्यक्ष कक्षा शिक्षण दक्षता जिसमें उपयुक्त शिक्षण सामग्री का चयन करना, कक्षा को रुचिकर बनाना, छात्रों को सीखने के लिए प्रोत्साहित करना सम्मिलित है।

(ख) अप्रत्यक्ष कक्षा शिक्षण दक्षता जिसमें उपयुक्त उदाहरण देना स्पष्ट भाषा का प्रयोग, अनुशासनात्मक वातावरण का निर्माण करना सम्मिलित है।

2. अशाब्दिक कक्षा अंत:क्रिया– अशाब्दिक कक्षा अत:क्रिया को दो भागों में विभाजित किया गया है। जो कक्षा शिक्षण के समय परिलक्षित होता है-

(क) सकारात्मक कक्षा अंत:क्रिया– जिसमें क्रमश: कक्षा में प्रसन्न रहना छात्रों के उत्तर को सुनना इत्यादि है।

(ख) नकारात्मक कक्षा अंत:क्रिया– जिसमें क्रमश: शिक्षण के प्रति उदासीन रहना, कक्षा में सख्त बने रहना, बात-बात पर नाराजगी प्रदर्शित करना इत्यादि है।

प्रदत्त सँकलन

प्रदत्तों के सँकलन के लिए प्रत्येक शिक्षक के कक्षा शिक्षण व्यवहार का तीन-तीन बार अवलोकन किया गया है।

प्रदत्त विश्लेषण

प्रस्तुत समस्या अर्थात् उच्च शिक्षा स्तरीय शिक्षक तथा शिक्षिकाओं की शाब्दिक शिक्षण दक्षता के तुलनात्मक अध्ययन के लिए काई वर्ग (χ^2) तथा प्रतिशत विश्लेषण का प्रयोग किया गया। अशाब्दिक शिक्षण व्यवहार के अध्ययन के लिए प्रतिशत विश्लेषण का प्रयोग किया गया है।

उद्देश्य 1 शाब्दिक कक्षा शिक्षण दक्षता की व्याख्या

तालिका 1 के अवलोकन से स्पष्ट है कि कक्षा में छात्रों को अधिक सीखने के लिए 'प्रोत्साहित करना' पर काई वर्ग का मान 8.43 है जो कि (df = 2) के .05 सार्थकता स्तर के तालिका मान से अधिक है।

तालिका 1
शिक्षक तथा शिक्षिकाओं की प्रत्यक्ष कक्षा शिक्षण दक्षता की तुलना के लिए χ^2 परीक्षण

क्र. सं.	पद	शिक्षक				शिक्षिका				अवलोकन χ^2 (2×3 मान पर) $df = 2$
		अधिक प्रभावी	कम प्रभावी	अप्रभावी	योग	अधिक प्रभावी	कम प्रभावी	अप्रभावी	योग	
1.	उपयुक्त शिक्षण सामग्री का चयन करना	22 (73.33)	5 (16.67)	3 (10)	30	15 (50)	5 (16.67)	10 (33.33)	30	5.08
2.	शिक्षक द्वारा कक्षा को रुचिकर बनाना	17 (56.67)	7 (23.33)	6 (20)	30	14 (46.67)	10 (33.33)	6 (20)	30	0.818
3.	कक्षा में छात्रों को अधिक सीखने के लिए प्रोत्साहित करना	20 (66.67)	6 (20)	4 (13.33)	30	11 (36.67)	4 (13.33)	15 (50)	30	8.43*
4.	शिक्षक द्वारा छात्रों से प्रश्न पूछना- (i) ज्ञानात्मक प्रश्न	18 (60)	6 (20)	6 (20)	30	11 (36.67	7 (23.33)	12 (40)	30	3.75
	(ii) अभिसमणात्मक प्रश्न	10 (33.33)	3 (10)	17 (56.67)	30	6 (20)	2 (6.67)	22 (73.33)	30	1.84
	(iii) अपसरणात्मक प्रश्न	8 (26.67)	2 (6.67)	20 (66.67)	30	6 (20)	2 (6.67)	22 (73.33)	30	2.61

*.05 स्तर पर सार्थक

अत: इसे .05 सार्थकता स्तर पर स्वीकार किया जाता है। इस दक्षता के लिए नकारात्मक परिकल्पना को अस्वीकार करते हुए कह सकते हैं कि इलाहाबाद विश्वविद्यालय में कार्यरत शिक्षक तथा शिक्षिकाओं की प्रत्यक्ष कक्षा शिक्षण दक्षता की इस शिक्षण दक्षता में सार्थक अन्तर है।

प्रतिशत विश्लेषण से अवलोकित होता है कि जहाँ अधिकाधिक 66.67% शिक्षक तो वहीं केवल 36.67% शिक्षिकाए ही छात्रों को अधिक सीखने के लिए प्रभावी ढंग से प्रोत्साहित करती हैं।

इसी प्रकार कक्षा शिक्षण में 'उपयुक्त शिक्षण सामग्री का प्रयोग करना' जैसे शिक्षण व्यवहार के जहाँ 73.33% शिक्षक तो वहीं केवल 50% शिक्षिकाएँ ही प्रभावी ढंग से कक्षा में उपयोग करती है।

तालिका के अवलोकन से स्पष्ट है कि अन्य सभी शिक्षण दक्षताओं के लिए जैसे– शिक्षक द्वारा कक्षा को रुचिकर बनाना तथा छात्रों से प्रश्न पूछना जैसे पदों के लिए शिक्षक तथा शिक्षिकाओं दोनों का ही कक्षा शिक्षण व्यवहार लगभग समान पाया गया।

तालिका 2

शिक्षक तथा शिक्षिकाओं के मध्य अप्रत्यक्ष कक्षा शिक्षण दक्षता की तुलना के लिए χ^2 परीक्षण की तालिका

क्र. सं.	पद	*शिक्षक*				*शिक्षिकाएँ*				*अवलोकन*
		अधिक प्रभावी	*कम प्रभावी*	*अप्रभावी*	*योग*	*अधिक प्रभावी*	*कम प्रभावी*	*अप्रभावी*	*योग*	χ^2(*2×3 मान पर*) $df = 2$
1.	कक्षा में व्याख्यान के साथ नोट्स देना	21 (70)	7 (23.33)	2 (6.67)	30	10 (33.33)	9 (30)	11 (36.67)	30	10.38**
2.	छात्रों को उचित दिशा में निर्देशित करना	12 (40)	5 (16.67)	13 (43.33)	30	19 (63.33)	7 (23.33)	14 (13.33)	30	6.67*
3.	पाठ के उपयुक्त उदाहरण देना	18 (60)	5 (16.67)	7 (23.33)	30	14 (46.67)	8 (26.67)	8 (26.67)	30	1.26
4.	छात्रों द्वारा पूछे गये प्रश्नों का उत्तर देना	18 (60)	7 (23.33)	5 (16.67)	30	16 (53.33)	8 (26.67)	6 (20)	30	2.72
5.	छात्रों को उद्‌बोधित करना (i) वर्तमान तथ्यों के प्रति	15 (50)	7 (23.33)	8 (26.67)	30	15 (50)	6 (20)	9 (30)	30	2.71
	(ii) विषयों के प्रति	20 (66.67)	6 (20)	4 (13.33)	30	15 (50)	6 (20)	9 (30)	30	2.63
6.	कक्षा में स्पष्ट भाषा का प्रयोग करना	20 (66.67)	7 (23.33)	3 (10)	30	20 (66.67)	5 (16.67)	5 (16.67)	30	.832
7.	अनुशासनात्मक वातावरण का निर्माण करना	22 (73.33)	7 (23.33)	1 (3.33)	30	16 (53.33)	8 (26.67)	6 (20)	30	4.58
8.	छात्रों को उचित पृष्ठपोषण देना	20 (66.67)	8 (26.67)	2 (6.67)	30	10 (33.33)	8 (26.67)	12 (40)	30	10.46**

** */ * .01/.05 स्तर पर सार्थक

तालिका 2 के अवलोकन से स्पष्ट है कि कक्षा शिक्षण के अप्रत्यक्ष शिक्षण दक्षता का जब अवलोकनात्मक विश्लेषण काई वर्ग के माध्यम से किया गया तो छात्रों को 'उचित दिशा में निर्देशित करना' जैसे शिक्षण व्यवहार का काई वर्ग मान 6.67 आया जो कि (df = 2) के .05 के सार्थकता स्तर से अधिक है। अत: यह पद .05 स्तर पर सार्थक है। दक्षता के लिए नकारात्मक परिकल्पना को अस्वीकार करते हुए कह सकते हैं कि शिक्षकों तथा शिक्षिकाओं के शिक्षण व्यवहार में इस पद के लिए अन्तर पाया गया।

इसी प्रकार 'कक्षा में व्याख्यान के साथ नोट्स देना' तथा 'कक्षा में छात्रों को उचित पृष्ठपोषण देना' जैसे – शिक्षण व्यवहार का काई वर्ग मान क्रमश: 10.38 तथा 10.46 आया जो (df = 2) के .01 सार्थकता स्तर के तालिका मान से अधिक है। अत: हम कह सकते हैं कि ये पद .01 स्तर पर सार्थक हैं। अत: यहाँ नकारात्मक परिकल्पना को अस्वीकार करते हुए कहा जा सकता है कि कक्षा में 'व्याख्यान के साथ नोट्स देना' तथा कक्षा में छात्रों को 'उचित पृष्ठपोषण देना' जैसे—शिक्षण व्यवहार के प्रति शिक्षकों तथा शिक्षिकाओं की दक्षता में सार्थक अंतर है।

प्रतिशत विश्लेषण से स्पष्ट है कि छात्रों को उचित दिशा में निर्देशित करना' पद पर 40% शिक्षक तो वहीं 63.33% शिक्षिकाएँ प्रभावी पायी गयीं। अर्थात् शिक्षिकाएँ छात्रों को दिशा–निर्देशन करने में शिक्षकों की अपेक्षा अधिक प्रभावी पायी गयीं।

अन्य पदों जैसे 'कक्षा में व्याख्यान के साथ नोट्स देना' तथा छात्रों को 'उचित पृष्ठपोषण देना' के लिए शिक्षक क्रमश: 70% तथा 67% दक्षता प्रदर्शित करते हैं तो वहीं मात्र 34% तथा 33% शिक्षिकाएँ ही इनके प्रति दक्षता को प्रदर्शित करती हैं। अर्थात हम कह सकते है कि इन पदों के लिए शिक्षक समूह शिक्षिका समूह से अधिक प्रभावी है।

तालिका के अवलोकन से स्पष्ट है कि अन्य कक्षा शिक्षण व्यवहार के प्रति शिक्षक तथा शिक्षिकाओं के प्रभाव का प्रतिशत लगभग समान स्तर का है।

इस प्रकार हम कह सकते हैं कि 'व्याख्यान के साथ नोट्स देना', 'छात्रों को उचित दिशा में निर्देशित करना', इत्यादि शिक्षण व्यवहारों के प्रति शिक्षकों द्वारा शिक्षिकायें की अपेक्षा अधिक दक्षता प्रदर्शित की गयी।

उद्देश्य 2 अशाब्दिक कक्षा अंत:क्रिया– कक्षा में शिक्षकों तथा शिक्षिकाओं के अशाब्दिक कक्षा अन्त:क्रियात्मक दक्षता की तुलना तालिका 3 में दिखाई गई हैं।

तालिका 3

(1) सकारात्मक कक्षा अंत:क्रिया

	कथन	*शिक्षक %*	*शिक्षिका %*
(अ)	कक्षा में आत्मविश्वास प्रकट करना	83.33%	83.77%
(ब)	छात्रों के उत्तर को ध्यानपूर्वक सुनना	56.67%	58.67%
(स)	छात्रों के उत्तर के प्रति सकारात्मक भाव	36.67%	40.42%
(द)	कक्षा में प्रसन्नता का वातावरण बनाना	40%	36%
(य)	छात्रों के प्रति उत्तरदायित्व प्रकट करना	50	53

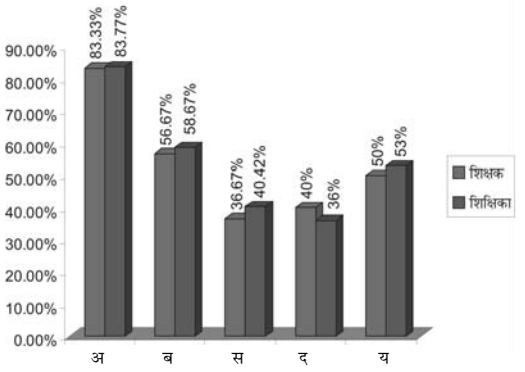

शिक्षकों के सकारात्मक कक्षा अंत:क्रिया की तुलना हेतु प्रतिशत रेखा चित्र

तालिका 3 में अशाब्दिक कक्षा अंत:क्रिया के प्रति कुल शिक्षकों द्वारा प्रदर्शित की गयी दक्षताओं का प्रतिशतीय विश्लेषण निम्न प्रकार है-

सकारात्मक कक्षा अंत:क्रिया

- कक्षा अवलोकन से स्पष्ट है कि सर्वाधिक 83% शिक्षकों में तथा 84% शिक्षिकाओं ने कक्षा में आत्मविश्वास का भाव परिलक्षित हुआ।
- 57% शिक्षक तथा 58% शिक्षिकाओं द्वारा कक्षा में छात्रों द्वारा कही गयी बात को ध्यानपूर्वक सुनते पाया गया। 50% शिक्षक तथा 53% शिक्षिकाओं द्वारा छात्रों के प्रति अपने उत्तरदायित्व के प्रति जागरूकता प्रदर्शित की गयी।
- 40% शिक्षकों तथा 36% शिक्षिकाओं द्वारा कक्षा को रुचिकर बनाने की दक्षता प्रदर्शित की गयी तो मात्र 37% शिक्षकों तथा 40% शिक्षिकाओं द्वारा ही छात्रों के उत्तर के प्रति सकारात्मक भाव प्रदर्शित किये गए अर्थात इसके द्वारा छात्रों द्वारा दिये गये उत्तरों के प्रति प्रशंसा की गयी।

तालिका 4

(2) शिक्षकों की नकारात्मक कक्षा अंत:क्रिया की तुलना

	कथन	शिक्षक %	शिक्षिका %
(अ)	शिक्षण के प्रति उदासीन रहना	36.67%	36%
(ब)	कक्षा में सख्त रहना	50%	54%
(स)	चिड़चिड़ापन प्रदर्शित करना	43.33%	52%

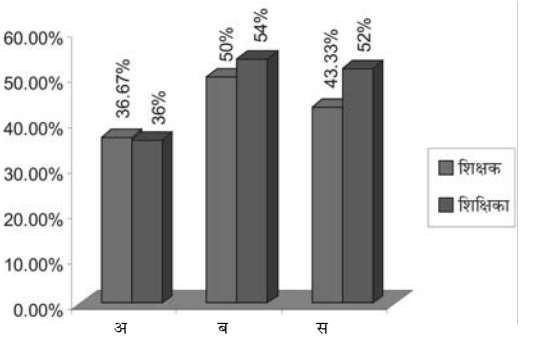

शिक्षकों के सकारात्मक कक्षा अंत:क्रिया की तुलना हेतु प्रतिशत रेखा चित्र

नकारात्मक कक्षा अंत:क्रिया

- कक्षा अवलोकन के समय पाया गया कि 50% शिक्षक तथा 54% शिक्षिकाएँ कक्षा में सख्त बने रहना पसंद करती हैं जिसका कारण यह हो सकता है कि अधिकतर शिक्षकों द्वारा माना जाता है कक्षा में छात्रों से अधिक मित्रवत व्यवहार करना कक्षा में अनुशासनहीनता को बढ़ावा देना है।
- 43% शिक्षकों तथा 52% शिक्षिकाओं द्वारा कक्षा में चिड़चिड़ापन प्रदर्शित किया गया अर्थात् इनके द्वारा कक्षा शिक्षण के समय बात-बात पर छात्रों पर नाराजगी व्यक्त की गयी तथा छात्रों को परस्पर अन्त:क्रिया का अवसर नहीं दिया गया।

- 37% शिक्षकों तथा 36% शिक्षिकाओं द्वारा कक्षा में उदासीनता का भाव व्यक्त किया गया अर्थात् शिक्षकों द्वारा कक्षा शिक्षण के समय कक्षा वातावरण तथा शिक्षण के प्रति अपने व्यवहार से कोई विशेष लगाव नहीं प्रदर्शित करते नहीं पाया गया।

निष्कर्ष– अध्ययन से प्राप्त निष्कर्ष निम्नलिखित है– कक्षा में व्याख्यान के साथ नोट्स देना, तथा छात्रों को अध्ययन के लिए उचित पृष्ठपोषण देना, जैसे शिक्षण व्यवहार को जहाँ 67–70% शिक्षकों द्वारा अधिक प्रभावी ढंग से व्यक्त किया गया वहीं मात्र 33% शिक्षिकाएँ ही इस शिक्षण व्यवहारों को प्रभावी ढंग से व्यक्त करती हैं।

- 67% शिक्षकों तथा 37% शिक्षिकाओं द्वारा कक्षा में छात्रों को सीखने के लिए प्रोत्साहित किया जाता है।
- 63% शिक्षिकाएँ तथा 40% शिक्षकों द्वारा छात्रों को उचित दिशा में निर्देशित करते हुए पाया गया। इस प्रकार स्पष्ट है कि छात्रों को निर्देशन देने के संबंध में शिक्षिकाएँ, शिक्षकों की अपेक्षा छात्रों को अधिक प्रभावित करती है।

इसके अतिरिक्त ऐसे शिक्षण व्यवहार जिनके प्रति नियमित शिक्षक तथा सम्पर्क कक्षा शिक्षकों के मध्य कोई अन्तर नहीं पाया गया वे निम्नलिखित हैं–

(1) कक्षा में व्याख्यान के अनुरूप उदाहरण देना।
(2) छात्रों को उद्‌बोधित करना।
(3) कक्षा में स्पष्ट भाषा का प्रयोग करना।
(4) कक्षा में अनुशासनात्मक वातावरण का निर्माण करना।
(5) उपयुक्त शिक्षण सामग्री का चयन करना।
(6) कक्षा को रुचिकर बनाना।
(7) कक्षा में छात्रों से उचित संबंध बनाना।

उपर्युक्त अवलोकन से स्पष्ट होता है कि व्याख्यान के साथ नोट्स देना, छात्रों को उचित पृष्ठपोषण देना तथा छात्रों को अधिक सीखने के लिए प्रोत्साहित करना जैसी दक्षता के लिए शिक्षक, शिक्षिकाओं की अपेक्षा अधिक दक्ष पाये गए जिसका कारण शिक्षकों को छात्रों से सहज संबंध स्थापित करने का अधिक समय मिलना हो सकता है। अत: वे छात्रों की अकादमिक कमजोरियों का ज्ञान रखते हैं और वे छात्रों को उचित निर्देशन तथा पृष्ठपोषण देने में समर्थ होते हैं किंतु छात्रों को 'उचित दिशा में निर्देशित करना' जैसे पद के लिए शिक्षिकाएँ शिक्षकों की अपेक्षा अधिक दक्षता में व्यक्त करती हैं जिसका कारण शिक्षिकाओं का शिक्षण व्यवसाय तथा छात्रों के प्रति अपने उत्तरदायित्व को समझना हो सकता है।

इसके अतिरिक्त अन्य पदों पर शिक्षकों के व्यवहार में कोई अन्तर नहीं पाया गया, जिसका कारण दोनों ही समूह के शिक्षण करने वाले शिक्षक द्वारा अनिवार्य योग्यताओं की पूर्ति करना है।

अध्ययन से स्पष्ट है कि शिक्षकों द्वारा कुछ शिक्षण दक्षताओं जैसे—'कक्षा में प्रश्न पूछना' कक्षा को रुचिकर बनाना तथा उचित शिक्षण सामग्री का प्रयोग करना के प्रति बहुत ही कम दक्षता प्रकट होती है। अध्ययन से अवलोकित होता है कि कक्षा में जो प्रश्न पूछा जाता है वह सामान्यत: स्मृति आधारित प्रश्न ही होता है न कि छात्रों के चिंतन को उद्‌बोधित करने वाला।

सुझाव

- उच्च शिक्षा स्तर पर कार्यरत अधयापकों को छात्रों से सहज संबंध बनाने के लिए प्रशिक्षण दिया जाए।
- शिक्षकों को छात्रों को स्वयं सीखने के लिए उद्‌बोधित करना चाहिए।
- शिक्षकों द्वारा कक्षा अनुशासनात्मक वातावरण के निर्माण के लिए उचित शिक्षण विधि को अपनाया जाना चाहिए।
- शिक्षकों को अपने विषय तथा सामान्य शिक्षण दक्षता में और अधिक दक्ष होने के लिए सेवाकालीन प्रशिक्षण की व्यवस्था की जानी चाहिए।
- कक्षा में शिक्षकों व छात्रों का अनुपात उचित हो ताकि शिक्षक छात्रों से प्रभावी ढंग से सम्प्रेषण कर सकें।
- शैक्षणिक संस्थानों में दक्ष और योग्य शिक्षकों की नियुक्ति की जानी चाहिए।

संदर्भ

अग्रवाल, जे. पी. 1992, *एजुकेशन पॉलिसी इन इंडिया.*

जेठी, आर. कुमार, वी. 2007 ए *सोसिंग इफेक्टिवनेस ऑफ टीचिंग थ्रो स्टूडेंट रेटिंग–ए स्टडी,* यूनिवर्सिटी न्यूज, वॉल्यूम-45, नई दिल्ली.

तिवारी, जी. एन. 2001 *ए स्टडी ऑफ टीचर्स कॉम्पिटेन्सी एण्ड ट्रेनिंग नीड्स ऑफ प्राइमरी स्कूल टीचर्स ऑफ इलाहाबाद डिस्ट्रिक्ट*, अप्रकाशित लघु शोध प्रबंध, इलाहाबाद विश्वविद्यालय, इलाहाबाद.

नसीमा, सी. 2006 *ट्रेनिंग नीड्स ऑफ कॉलेज टीचर्स ए सर्वे*', अलीगढ. मुस्लिम विश्वविद्यालय में यू.जी.सी. द्वारा प्रतिपादित सेमिनार प्रोफेशनलिज्म इन हायर एजुकेशन में प्रस्तुत प्रपत्र.

पंडा, वी. एन. और आर.सी. मोहन्ती, 2003 *हाऊ टू वक्रिंग ए काम्पिटेंट, सक्सेसफुल टीचर',* डिस्कवरी पब्लिसिंग हाउस, नई दिल्ली.

भाटिया, आर. 2006 *वैल्यू एजुकेशन इन टीचर्स एजुकेशन इश्यू ऑफ कन्सर्न,*' यूनिवर्सिटी न्यूज वॉल्यूम 44, ए.आई. यू., नई दिल्ली.

रामचन्द्राकर, के. और निलावर, एस. एस. 1997 *परसिब्ड ट्रेनिंग नीड्स ऑफ कॉलेज टीचर्स*', पंडा द्वारा (सम्पादित) स्टॉफ डेवलपमेंट इन हॉयर एण्ड डिस्टेंस एजुकेशन, प्रकाशन अरावली बुक इंटरनेशनल, नई दिल्ली.

वोस. एस. 2005 *इनहेंसिंग प्रोफेशनलिज्म इन टीचर– इन एक्सप्लोरेसन*, न्यू फ्रंटियर इन एजुकेशन', वॉल्यूम-35, अक्टूबर, 2005.

शर्मा, आर. ए. 2005 *एनालिसिस क्लास रूम टीचर बीहैवियर, टीचर एजुकेशन*, लॉयल बुक डिपो, मेरठ.

शर्मा, वी. एम. 2004 *टीचर ट्रेनिंग एण्ड एजुकेशन रिसर्च',* कॉमन वेल्थ पब्लिशर, नई दिल्ली.

शर्मा, जे. पी. 2006 *ट्रेनिंग एण्ड डेवलपमेंट ऑफ द एकेडमिक स्टॉफ– ए स्टडी*, यूनिवर्सिटी न्यूज, नई दिल्ली.